

बौद्ध साहित्य एवं उनकी भाषा पर प्रकाश डालें —

भूमिका :

बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ-साथ इसका साहित्य भी अत्यंत समृद्ध हुआ। बुद्ध के उपदेशों को उनके अनुयायियों ने मौखिक रूप में संकलित किया और बाद में उन्हें ग्रंथों के रूप में लिखा गया। यह साहित्य न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि भाषा, इतिहास, दर्शन और संस्कृति की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

१. बौद्ध साहित्य के प्रमुख वर्ग

बौद्ध साहित्य को तीन मुख्य भागों में बाँटा गया है, जिन्हें त्रिपिटक कहा जाता है —

(क) विनय पिटक (Vinaya Pitaka)

इसमें संघ (भिक्षुओं और भिक्षुणियों) के आचरण-संबंधी नियम और अनुशासन का वर्णन है।

इसमें भिक्षुओं के लिए 227 नियम और भिक्षुणियों के लिए 311 नियम बताए गए हैं।

यह संघ के संगठन और अनुशासन का मूल आधार है।

(ख) सुत्त पिटक (Sutta Pitaka)

इसमें स्वयं बुद्ध और उनके प्रमुख शिष्यों के प्रवचनों का संग्रह है।

इसमें धर्म, नीति, ध्यान, करुणा और जीवन-दर्शन से जुड़ी शिक्षाएँ हैं।

इसके प्रमुख संग्रह हैं — दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुत निकाय, अंगुत्तर निकाय और खुद्धक निकाय।

(ग) अभिधम्म पिटक (Abhidhamma Pitaka)

इसमें बौद्ध दर्शन का विस्तृत विवेचन किया गया है।

इसमें मनोविज्ञान, तत्त्वज्ञान और ज्ञानमीमांसा का गहन विश्लेषण है।

यह बौद्ध धर्म का दार्शनिक आधार मानी जाती है।

२. बौद्ध साहित्य की भाषा

बौद्ध धर्म का प्रचार जनसाधारण के बीच हुआ, इसलिए इसकी भाषा सरल और लोकप्रचलित रही।

(क) पाली भाषा :

प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथ पाली भाषा में रचे गए।

पाली त्रिपिटक बौद्ध धर्म का सबसे प्राचीन और प्रमाणिक ग्रंथ है।

यह हीनयान (थेरवाद) परंपरा की प्रमुख भाषा रही।

(ख) संस्कृत भाषा :

महायान परंपरा में बौद्ध साहित्य संस्कृत में रचा गया।

प्रसिद्ध ग्रंथ — ललितविस्तर, सद्धर्मपुंडरीक सूत्र, अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता आदि।

(ग) अन्य भाषाएँ :

बौद्ध धर्म के विदेशों में फैलने पर इसके ग्रंथ चीनी, तिब्बती, सिंहली और मंगोली भाषाओं में अनूदित किए गए।

चीन के त्रिपिटक और तिब्बती कंजूर-तंजूर इसके प्रमाण हैं।

३. बौद्ध साहित्य की विशेषताएँ

इनमें बुद्ध के उपदेशों का व्यावहारिक और नैतिक रूप मिलता है।

यह साहित्य दार्शनिक, धार्मिक और ऐतिहासिक सभी दृष्टियों से मूल्यवान है।

बौद्ध ग्रंथों से तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का भी परिचय मिलता है।

निष्कर्ष :

बौद्ध साहित्य न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय भाषा, दर्शन, कला और इतिहास की एक जीवंत परंपरा को भी उजागर करता है। पाली और संस्कृत दोनों ही इस साहित्य की आधारभूत भाषाएँ रही हैं, जिन्होंने एशिया की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया।